मारा अवगुण घणां रे अनंत, पण छेह केम दीजिए रे।
एणे वचने इंद्रावती अंग, वालो तेडी लीजिए रे।। १५ ।।

हे वालाजी! मुझ में बहुत अवगुण हैं, किन्तु आप तो मेरे पति हैं। जुदाई क्यों देते हो? इन्द्रावती के इन वचनों को सुनकर बुला लीजिए।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। १५ ।।

।। सरद रुत ।।
राग सामेरी

सरदनी रुत रे सोहामणी रलियामणी, मूने वालाजी विना केम जाए हो वालैया।
हूं रे वदेसण ना पिउजी, मूने खिण वरसां सो थाय, हो वालैया।। १ ।।

हे वालाजी! शरद ऋतु बहुत सुहावनी और रमणीय है, किन्तु आपके बिना यह कैसे बीते? मैं विदेश में हूं। आपकी जुदाई में एक-एक पल सौ-सौ वर्षों के समान बीत रहा है।

वाला जी रे डोहलाते जल वही गया, हवे आव्या ते निरमल नीर।
पिउजी विना हूं एकली, ते तां केम राखूं मन धीर।। २ ।।

हे वालाजी! मटमैला जल बह गया है। अब स्वच्छ पानी आ गया है। हे प्रीतम! ऐसे में अकेली मैं मन में कैसे धीरज धरूं?

वालाजी रे वन छाह्यूं द्रुम वेलडी, हवे धणी तणी आवार।
हूं रे वदेसण ना पिउजी, मूने चरणे तेडो आधार।। ३ ।।

हे वालाजी! वन में लताएं वृक्षों पर चिपट रही हैं और अपने प्रीतम की सुध दे रही हैं। हे धनी! मैं विदेश में हूं। मुझे चरणों में बुलाओ।

वालाजी रे नीझर जल रे डूंगर झरे, नदी सर भरिया निवाण।
पण एक जल वालाजी विना, मारा विलखंता सूके प्राण।। ४ ।।

हे वालाजी! पर्वतों से सुन्दर जल के झरने झर रहे हैं। नदी और तालाब भर गए हैं, परन्तु मेरे लिए तो आप ही जल हैं, जिनके बिना मेरे प्राण रो-रोकर सूखे जा रहे हैं।

वालाजी रे जीव मारो मूने दहे, अंग ते उपजे दाझ।
अवगुण मारा छे अति घणा, तमे रखे मन आणो राज।। ५ ।।

हे मेरे प्रीतम! आपका वियोग मुझे जलाता है। मेरे अंग में विरह की आग लग रही है। मैं जानती हूं कि मेरे बहुत अवगुण हैं, किन्तु, धनी! तुम मन में इनका विचार मत करो।

वालाजी रे श्रावण मासनी अष्टमी, कांई कृष्ण पखनी जेह।
मूने ए रैणी वालाजी विना, घणूं दोहेली गई तेह।। ६ ।।

हे धनी! श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी आई है। आपके बिना मेरी यह रात्रि बड़ी कठिनाई से बीती।

वालाजी रे एम तमे मोसूं कां करो, मारा हो प्राणनाथ।
आवी करूं तमसूं गुझडी, मारी वीतकनी जे वात।।७।।

हे मेरे प्राणनाथ! आप मुझसे ऐसा क्यों करते हो? मैं आऊंगी और मेरे ऊपर जो बीती है उनकी गुझ (गुह्य) बातें बताऊंगी।

वालाजी रे अष्टमी भादरवा तणी, कांई सुकल पखनी रात।
ए रैणी रुडीय छे, मारा जनम संघाती साथ।।८।।

हे वालाजी! भाद्रपद (भादों) मास के शुक्ल पक्ष (उजाला पक्ष) की अष्टमी (राधा अष्टमी) की रात आई है। यह रात्रि बड़ी अच्छी है। पर मेरे जन्म-जन्म के (हमेशा के) साथी आप ही मेरे पास नहीं हैं।

वालाजी रे में तां एम न जाण्यूं, जे मोसूं थासे एम।
जो हूं जाणूं करसो विरहणी, तो कंठ बांहोंडी टालूं केम।।९।।

वालाजी! मुझे ऐसा पता नहीं था कि मेरे साथ ऐसी बीतेगी। यदि मुझे यह पता होता कि आप अलग हो जाएंगे और मैं विरहिणी बन जाऊंगी, तो आपके गले से हाथ ही न छोड़ती (आपके चरणों से जुदा न होती)।

वालाजी रे भादरवा मासनी चतुरदसी, कांई अति अजवाली थाय।
एह समे नव साचव्यो, मारूं तरवारे अंग तछाय।।१०।।

हे वालाजी! भादों मास की शुक्ल पक्ष (उजाली) चतुर्दशी की रात आई है। इस समय मैं न संभल सकी। मैं अपने अंग को तलवार से काट डालूं, ऐसा लगता है।

वालाजी ए रैणी रे सिधाविया, वालो पोहोंता ते धाम मंझार।
एणे समे मूने एकली, तमे कांय राखी आधार।।११।।

इस रात्रि में मेरे वालाजी (श्री देवचन्द्रजी) धाम पधारे। इस समय मुझे अकेली क्यों रखा?

वालाजी रे तमे तो घणुंए जणावियुं, पण में नव जाण्युं हूं अधम।
जो हूं जाणूं थासे एवडी, तो तमने मूकूं केम।।१२।।

हे धनी! आपने तो अच्छी तरह से समझा दिया था, परन्तु मैं ही नीच थी जो नहीं जान सकी। यदि मुझे पता लग जाता कि ऐसा होगा (कि पिया धाम चले जाएंगे) तो आपको कैसे छोड़ती?

वालाजी रे चतुरदसी आसो तणी, कांई ब्रह्मांड थयो प्रकास।
ए रजनी मूने एकली, तमे कांय मूकी निरास।।१३।।

हे वालाजी! आश्विन (कुंवार) महीने की चतुर्दशी में सारे ब्रह्माण्ड में उजाला फैल गया। इस रात्रि में आपने मुझे अकेला छोड़कर निराश क्यों किया? (धनी देवचन्द्रजी प्रगटन महोत्सव)

वालाजी रे पूनम रातनो चांदलो, कांई वन सोभे अपार।
रासनी रातनो ओछव, मूने कां न तेडी आधार।।१४।।

हे धनी! शरद पूनम (पूर्णिमा) की रात की चांदनी में वन की शोभा अपार हो गई है। इस रास की रात्रि के उत्सव में मुझे क्यों नहीं बुलाते।

वालाजी रे अवगुण मारा छे अति घणा, तमे रखे मन आणो धणी।
विरहणी कहे मूने तम विना, अम ऊपर थई छे घणी।। १५ ।।

हे प्रीतम! मेरे अन्दर तो अनेक अवगुण हैं, पर तुम इन्हें मन में न रखो। विरहिणी श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मुझ पर आपके बिना बुरी बीत रही है।

वालाजी रे विनता विरहणी केम कीजिए, एवडो न कीजे रोष।
जो जीव देह मूकी चालयो, तमे त्यारे थासो निरदोष।। १६ ।।

हे वालाजी! इतना रोष न करें। अपनी अंगना को विरहिणी न बनाएं। यदि मेरा जीव शरीर छोड़कर चला गया तो क्या आप निर्दोष हो जाएंगे? (नहीं, आप गुनाहगार हो ही जाओगे)।

हवे चित आणी चरणे तेडजो, विरहणी टालो आधार।
एणे वचने इंद्रावतीने, वालो तेडी लेसे तत्काल।। १७ ।।

हे वालाजी! इस विनती को चित्त में धारण कर चरणों में बुलाओ और मेरा वियोग मिटाओ। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे इन वचनों से वालाजी तुरन्त बुला लेंगे।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ३२ ।।

।। हेमन्त रुत (कार्तिक-मगसर) ।।
राग सिंधुड़ा

रुतने आवी रे वालैया हेमनी, मेघलियो गयो पोताने घेर आप।
रुतने सीतल रे लागे मूने दोहेली, हवे मूने कां ना तेडो प्राणनाथ।। १ ।।

हे धनी! हेमन्त ऋतु आई है। बादल अपने घर चले गए। अब ठण्डी हवा मुझे कष्ट देती है। ऐसे में, हे प्राणनाथ! मुझे क्यों नहीं बुलाते?

अंबरियो ने थयो रे वालाजी निरमलो, वादलियो गयो पोताने घेर ठाम।
हजी न संभारो रे वाला तमे विरहिणी, कां न भाजो रे रुदयानी हाम।। २ ।।

आसमान निर्मल हो गया है। बादल अपने घर (ठिकाने) चले गए हैं। इसलिए हे वालाजी! तुम अपनी विरहिणी अंगना को क्यों याद नहीं करते? मेरे हृदय की चाहना क्यों नहीं मिटाते हो?

हो दरसण ने दीजे रे वालैया दया करी, आ रुत में न खमाय।
जुओने विचारी रे वालैया जीवसूं, कालजडूं मारूं मांहें कपाय।। ३ ।।

हे वालाजी! दया करके मुझे दर्शन क्यों नहीं देते? यह ऋतु मेरे से सहन नहीं होती। हे वालाजी! आप अपने जीव से (अन्दर) विचार करके तो देखो। मेरा कलेजा अन्दर ही अन्दर फट रहा है।

नैणाने तरसे रे वालाजी ने निरखवा, श्रवणा तरसे वाणी रसाल।
वाचाने तरसे रे वालाजीसूं वातडी, जाणूं करी काढूं रुदयानी झाल।। ४ ।।

हे धनी! यह आंखें आपको देखने के लिए, कान आपकी सुन्दर वाणी सुनने के लिए तथा जबान आपसे बात करने के लिए तरस रहे हैं। ऐसा करके मैं अपने हृदय की तड़प शान्त करलूं।